डॉ0 राजविन्दर कौर
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय
सितारगंज
उधम सिहं नगर
(उत्तराखण्ड)
Email-
rajvinderkaur186@gmail.com

विषय	–	हिन्दी
कक्षा	–	कला स्नातक
वर्ष / सेमेस्टर	–	प्रथम वर्ष
प्रश्नपत्र	–	द्वितीय
शीर्षक	–	भाषा की विशेषताएँ तथा प्रवृत्तियॉ

स्वघोषणा–पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक / वाणिज्यिक एवं किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ किसी और के साथ वितरित, पेसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका उपयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगें। इस ई–कण्टेण्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

भाषा की विशेषताएँ तथा प्रवृत्तियाँ

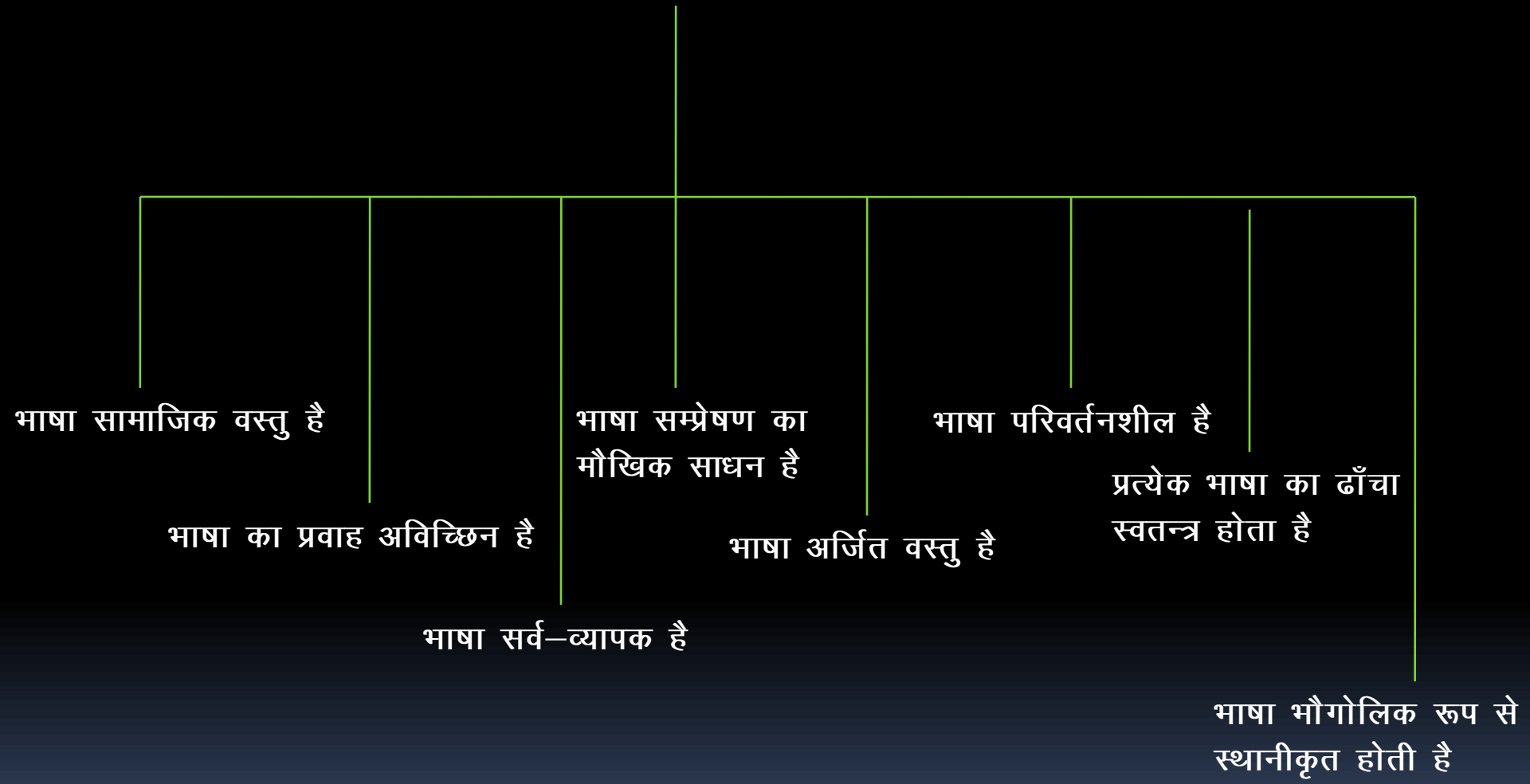

भाषा की विशेषताएँ तथा प्रवृत्तियाँ

१. भाषा सामाजिक वस्तु है

भाषा की उत्पति समाज से होती है और उसका विकास भी समाज में ही होता है।आरम्भिक पाठ माता ही पढाती है, क्योकि जन्म के बाद जितना सम्बन्ध उससे होता है,उतना समाज के किसी और प्राणी से नहीं । इसलिए उसके ऋण या अभार को स्वीकार करने के लिए मातृभाषा शब्द का प्रयोग कर दिया जाता है। भाषा की उत्पति प्रधानतः सामाजिकता के निर्वाह के लिए ही हुई है।

२. भाषा का प्रवाह अविच्छिन है

मनुष्य के समान भाषा की भी धारा सतत प्रवहमान है। जिस प्रकार उदगम–स्थल से लेकर समुद्र–पर्यन्त नदी की धारा अविच्छिन होती है, वह कहीं भी सूखती या टूटती नहीं, उसी प्रकार जब से भाषा आरम्भ हुई तब से आज तक चली आ रही है और जब तक मानव–समाज रहेगा तब तक इसी प्रकार चलती रहेगी । व्यक्ति उसे अर्जित कर सकता है, उसमें थोडा–बहुत परिवर्तन भी कर सकता है, किन्तु न तो उसे उत्पन कर सकता है और न ही समाप्त कर सकता है।

३. भाषा सर्व–व्यापक है

मनुष्य का समस्त कार्य–कलाप भाषा से परिचालित होता है। व्यक्ति–व्यक्ति का सम्बन्ध या व्यक्ति–समाज का सम्बन्ध भाषा के बिना अकल्पनीय है। संस्कृत के महान भाषाविज्ञानी भर्तृहरि ने कहा है–– संसार में कोई ऐसा प्रत्यय नहीं है जो भाषा के बिना सम्भव हो।

४. भाषा सम्प्रेषण का मौखिक साधन है

सम्प्रेषण के सांकेतिक ,आंगिक , लिखित , आदि अनेक रुप हैं। यधपि उसके लिखित रूप में आरोह–अवरोह आदि का कोई निर्देश नहीं होता। भाषा का सर्वप्रमुख माध्यम यही है कि उसे बोलकर पारस्परिक सम्प्रेषण का काम लिया जाये अर्थात् अपना अभिप्राय दूसरों तक पहुँचाया जाये ।

५. भाषा अर्जित वस्तु है

भाषा जन्मजात वस्तु नहीं है। मनुष्य में पशुओं की अपेक्षा इतनी विलक्षणता और विशिष्टता होती है कि वह भाषा सीख सकता है। अतः भाषा के अर्जन का अर्थ यही है कि उसे अपने चारों ओर के वातावरण से सीखना पडता है।

६. भाषा परिवर्तनशील है

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के समान भाषा भी परिवर्तित होने वाली वस्तु है।यह परिवर्तन भाषा के सभी तत्वों में पाया जाता है। ध्वनि , शब्द , व्याकरण , अर्थ –– इनमें कोई अपरिवर्तित नहीं रहता , परिवर्तन का क्रम ऐसा है जो चतुर्वेदी और उपाध्याय की ज्ञान–गरिमा को भी कुछ नहीं समझता और उन्हें तोड–मरोड देता है।

७. प्रत्येक भाषा का ढाँचा स्वतन्त्र होता है

प्रत्येक भाषा की बनावट ही नहीं , ढाँचा भी दूसरी भाषा से भिन्न होता है। हिन्दी में दो लिंग हैं, गुजराती में तीन। हिन्दी में भूतकाल के छः भेद हैं, रूसी में केवल दो। हिन्दी में दो वचन हैं, संस्कृत में तीन । कुछ भाषाओं में कुछ ध्वनियों का संयोग सम्भव है, पर दूसरी भाषाओं में नहीं । उदाहरणार्थ , अंग्रेजी में स् , ट् ,र जैसे स्टेटा , स्टीट आदि पर जापानी में सम्भव नहीं । रूसी में ह नही होता , ख होता है, अतः नेहरू को नेखरू ही लिख सकते है।

८. भाषा भौगोलिक रूप से स्थानीकृत होती है

प्रत्येक भाषा की भौगोलिक सीमा होती है । ‘ चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी ‘ वाली कहावत में चरितार्थ है। इसी से भाषा में भाषा या बोली का प्रश्न उठता है। यह भाषा का स्वरूपगत भेद भौगोलिक भेद के आधार पर ही हुआ करता है।

बोधात्मक प्रश्न

भाषा की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियो पर विचार कीजिए।

भाषा की प्रमुख प्रवृत्तियों का समीक्षात्मक अध्ययन कीजिए।

संदर्भसूची

भाषा विज्ञान – डॉ० भोलानाथतिवारी, शब्दकार, नई दिल्ली।

विज्ञानकी भूमिका – डॉ० देवेंद्रनाथ’र्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली।

भाषा विज्ञान – डॉ० कर्ण सिंह, साहित्य भंडार, मेरठ।

धन्यवाद